



Speech by Hon'ble Vice Chancellor, Prof. Saket Kushwaha delivered on 75th Republic Day of Union of India, 26th January 2024



Rajiv Gandhi University,
Rono Hills, Doimukh Arunachal Pradesh





"The true source of rights is duty. If we all discharge our duties, rights will not be far to seek."

- Netaji Subhash Chandra Bose





प्रो. साकेत कुशवाहा
कुलपति

26 जनवरी, 2024 का उद्घोषण



सुप्रभात !

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के संकायाध्यक्ष गण, कुलसचिव डॉ. एन. टी. रिकम जी, विभागाध्यक्ष गण, प्रांगण में उपस्थित समस्त प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी, विद्यार्थी, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय परिसर माध्यमिक विद्यालय से आए छोटे-छोटे बच्चे, उनके अध्यापक तथा अन्य सभी उपस्थित जनों को मैं साकेत कुशवाहा, देश के राष्ट्रीय पर्व 75वें गणतंत्र दिवस के पुनीत अवसर पर अपनी तरफ से एवं विश्वविद्यालय की ओर से आपसबको हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं सर्वप्रथम देश के सभी स्वतंत्रता सेनानियों को प्रणाम करता हूँ जिनके बलिदान व संघर्ष के परिणामस्वरूप ही आज हम स्वतंत्र देश के नागरिक होने के स्वाभिमान को जी रहे हैं। साथ ही मैं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर, अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई, नाभिकीय शोध के लिए डॉ. होमी भाभा, ए. पी. जे अब्दुल कलाम, अभियांत्रिकी के क्षेत्र में एम. विश्वेश्वरैया, कृषि वैज्ञानिक एम. एस. स्वामीनाथन, महान शिक्षाशास्त्री डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णणन जैसे आधुनिक भारत के दिशानिर्देशकों एवं निर्माताओं को हार्दिक नमन करता हूँ।

भारत सदियों से संसाधनों से संपन्न देश रहा है। यही कारण है कि सदियों से विश्व के कोने-कोने से लोग कुछ न कुछ पाने के लिए भारत आते रहे हैं। और अपनी अति उदारता के कारण दुर्भाग्य से भारत अंग्रेजों का गुलाम भी बना। भारत लगभग 250 वर्षों तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। वर्षों के कई कठिन संघर्षों और तपस्या के पश्चात 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन से भारत को आजादी

मिली। देश को आजादी दिलाने के लिए लाखों लोगों ने कुर्बानी दी। मैं आजादी की लड़ाई में वीरगति को प्राप्त स्वतंत्रता सेनानियों का विशेष नमन करता हूँ।

सन् 1950 के बाद से 26 जनवरी का दिन प्रति वर्ष 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाया जाता है। गणतंत्र का वास्तविक अर्थ ही है 'पूर्ण स्वराज'। 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र होने के बावजूद हमारे पास अपना संविधान नहीं था। कठिन परिश्रम और गहन विचार-विमर्श के बाद 2 वर्ष, 11 महीने और 18 दिन में हमारा अपना संविधान बनकर तैयार हुआ। मैं आज के इस पावन अवसर पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर को विशेष श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूँगा जिनकी अध्यक्षता में संविधान निर्माण का कार्य संपन्न हुआ, हमारा देश स्वतंत्र से गणतंत्र बन गया। साथियों, 1950 में आज ही के दिन हमें पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। मैं इस पावन अवसर पर आपसबको पुनः बधाई देता हूँ।

वर्तमान में देश में युवाओं की गिनती विश्व में सबसे अधिक है अर्थात् हमारे देश का भविष्य विश्व में सबसे ज्यादा उज्ज्वल है। लेकिन ये देश के युवाओं के लिए जिम्मेदारी का विषय है। आज की जिम्मेदार पीढ़ी ही भविष्य की प्रणेता और रचयिता है। मैं युवा शिक्षकगण, कर्मचारीगण एवं छात्रों को कहना चाहता हूँ कि देश के विकासमें बढ़चढ़कर काम करें। भारतीय लोकतंत्र की यात्रा को समझें। राष्ट्र की पहचान को आकार देने के लिए विविधता में एकता को बढ़ावा दीजिये। क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर एक देश के विकास के लिए लगना सबसे बड़ी आवश्यकता है। हमारे देश के भीतर विभिन्न संस्कृतियाँ, भाषाओं और परम्पराओं के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को आचार व्यवहार में उतारना श्रेष्ठता की पहचान है।

युवाओं की भारत के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका है। एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा, नवाचार और सामाजिक जिम्मेदारी का महत्व हमसबको जीवन में उतारना है। कई बार प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी सामने आती हैं। परन्तु लचीलेपन से उनको संभालना सीखना जरूरी है। तभी हम चुनौतियों और प्रतिकूलताओं पर काबू पा सकते हैं। भारतीय सांस्कृतिक भाव सबको साथ लेकर चलना स्वीकार करने के साथ साहस और दृढ़संकल्प द्वारा ही कार्यों को अनुकूल बनाया जा सकता है। कुछ नया करने की सोचें। एक ही ढर्रे से चीजों को देखने से सबकुछ रुका सा हो जाता है। अदम्य इच्छाशक्ति से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, संस्कार के क्षेत्र में भारत की प्रगति प्रत्येक देशवासी के योगदान से संभव है।

आर्थिक वृद्धि में उद्यमिता की महत्वपूर्ण भूमिका है। सतत विकास के लिए प्रगतिशील सोच अपनाएं। वैज्ञानिकता, आधुनिकता और विकास की दौड़ में कला और संस्कृति देश की सॉफ्ट पॉवर है। भारत की समृद्ध संस्कृतिक विरासत और वैश्विक मंच पर वर्तमान में इसके अभूतपूर्व प्रभाव को और मजबूत करने में प्रत्येक भारतीय नागरिक का रोल होना चाहिए और इसके लिए ये जरूरी है कि अपनी जड़ों की परम्पराओं, संस्कारों से जुड़े रहें, उनपर गर्व करें। आज देश में हर क्षेत्र में प्रगति हो रही है। कला, खेल, ग्रामीण विकास, शहरीकरण में मूलभूत सुविधाओं पर ध्यान दिया जा रहा है इसमें नागरिक सहभागिता की सबसे बड़ी जरूरत है। आधुनिक डिजिटल युग के दौर में हमें साइबर सुरक्षा के बढ़ते महत्व का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। जिम्मेदार डिजिटल नागरिकता रखें और ऑनलाइन खतरों के प्रति जागरूक रहें। मेरा सुझाव है कि यह खतरा आज सबसे तेजी से पनपते रोग की तरह है तो अति सावधानी बरतें। अपने अधिकारों के लिए हम बहुत सचेत रहते हैं अच्छी बात है, अपने कर्तव्यों के प्रति भी उतने ही सचेत और क्रियाशील रहें तो व्यक्तिगत उन्नति के साथ क्षेत्र की, देश की उन्नति जरूर होगी। 75वें गणतंत्र दिवस के शुभअवसर पर मेरा अपने विश्वविद्यालय परिवार को यही संदेश है।

विश्वविद्यालय परिवार के लिए गत वर्ष बहुत ही अनुकूल वर्ष रहा है। हमने सभी मोर्चों पर सफलता प्राप्त की है। इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। हमने 2023-24 सत्र के लिए पी एच. डी, एम. ए प्रथम सत्र, बी. ए. प्रथम सत्र तथा डिप्लोमा के विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए छात्रों को फॉर्म भरवाने से लेकर प्रवेश के लिए मौखिकी का आयोजन, कक्षा में प्रवेश तथा कक्षा शुरू करने जैसे कई समयबद्ध कार्यों को सुचारु रूप से संपन्न किया। प्रति वर्ष की भाँति हमने विश्वविद्यालय कैलेंडर का अनुपालन करते हुए अपनी तय तिथि पर विश्वविद्यालय के 21वें दीक्षांत समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

इस दौरान लगभग 54 नए पद सृजित किए गए हैं और राजीव गाँधी विश्वविद्यालय ने मिशन मोड भर्ती के तहत योग्य संकाय सदस्यों की भर्ती सफलतापूर्वक पूरी कर ली है। नॉन-टीचिंग में 17 पद विज्ञापित हुए हैं जिनकी नियुक्ति की प्रक्रिया 12 फरवरी तक संपन्न हो जाएगी। हमने यह संकल्प लिया है कि हम 13 फरवरी तक नियुक्ति पत्र जारी कर देंगे।

विश्वविद्यालय का पिछला वर्ष आधारभूत संरचना के विकास और वृद्धि के लिहाज से भी बहुत उत्साहजनक रहा है। इस बीच कई प्रोजेक्ट्स का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है और जो कुछ शेष है वह भी 31 मार्च 2024 तक पूरा हो जाएगा। इन निर्माणों से हमारी जगह की कमी की समस्या का बहुत हद तक समाधान हो जाएगा।

इस अवसर पर मैं विशेष रूप से अध्यापकों से आग्रह करना चाहूँगा कि आपलोग अपना पाठ्यक्रम एवं अपनी कक्षाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप बना लीजिये। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी)-2020 के अनुपालन में हमने अपने लगभग सभी शिक्षार्थियों के लिए अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (एबीसी) आई डी तैयार कर ली है। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा चयनित होने के बाद राजीव गाँधी विश्वविद्यालय ने चार वर्षीय एकीकृत बी.ए. कार्यक्रम को भी लागू कर दिया है। विश्वविद्यालय में मल्टीपल एंट्री और एग्जिट सिस्टम के साथ विज्ञान और सामाजिक विज्ञान (क्रमशः बी. ए और बी .एससी) में चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम (एफ वाई यू पी) लागू किया गया है। एन ई पी-2020 के तहत Four Year Undergraduate Programme (एफ वाई यू पी) के गुणवत्तापूर्ण कार्यान्वयन की सुविधा के लिए परिसर में अंडर ग्रेजुएट स्टडीज संस्थान की स्थापना की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन ई पी)-2020 के विज्ञान और दिशानिर्देशों के अनुपालन में विश्वविद्यालय के सभी पैंतालीस संबद्ध महाविद्यालयों में वर्तमान शैक्षणिक वर्ष 2023-24 से चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम (एफ वाई यू पी) को अनिवार्य कर दिया गया है।

हमने NAAC दौरे से सम्बंधित सभी औपचारिकताओं को पहले ही पूर्ण कर लिया है। बहुत जल्द नैक की टीम हमारे विश्वविद्यालय का दौरा करने आ रही है। नैक टीम के द्वारा हमारे विश्वविद्यालय में दौरे के लिए तीन Time Slot दिए गए हैं – पहला, फरवरी का पहला सप्ताह, दूसरा, फरवरी का अंतिम सप्ताह और तीसरा मार्च के महीने में होली से पहले। मुझे विश्वास है कि आप सबने अपनी-अपनी तैयारी पूर्ण कर ली होगी। मेरा आप सभी से आग्रह है कि इस नैक दौरे को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने के अवसर के रूप में लिया जाए। राष्ट्रीय फलक पर अपनी बेहतर उपस्थिति दर्ज कराने का यह सुनहरा अवसर है। इस सम्बन्ध में आपकी तैयारी पर मुझे पूरा भरोसा है। इसी तरह से NIRF रैंकिंग के लिए भी आप सबको तैयार रहना चाहिए। NIRF के सभी मानकों यानि parameters के अनुसार काम करना चाहिए ताकि हमारी रैंकिंग पहले से भी अच्छी हो सके। पिछले कई वर्षों से हमारा विश्वविद्यालय भारत सरकार द्वारा संचालित फ्लैगशिप कार्यक्रमों में बढ़-

चढ़ कर भाग लेता आ रहा है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में भारत सरकार ने विभिन्न प्रदेशों और क्षेत्रों के युवाओं को परस्पर जोड़ने के लिए 'युवा संगम' नामक पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया है। इस महत्वपूर्ण परियोजना की आधारशिला को पाँच तत्वों से निर्मित किया गया है- पर्यटन, परम्परा, प्रगति, परस्पर संपर्क और प्रौद्योगिकी। पर्यटन के माध्यम से विभिन्न परम्पराओं के युवा परस्पर संपर्क में आएंगे और उनके नवोन्मेषी विचारों को मूर्त रूप देने में प्रौद्योगिकी सहायता प्रदान करेगी। मैं अपने सभी विद्यार्थियों से आग्रह करता हूँ कि 'युवा संगम पोर्टल' पर जाकर इस परियोजना से जुड़े तथा इसके माध्यम से 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के लक्ष्य को मूर्त रूप देने में अपना योगदान दें। विश्वविद्यालय परिसर में इस परियोजना के सुचारु रूप से संचालन के लिए प्रो. शम्भू प्रसाद संयोजक नियुक्त किये गए हैं। मैं सभी अध्यापकों से विनम्र आग्रह करता हूँ कि आप अधिक से अधिक छात्रों को इसमें भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें। अभी पिछले महीने 'विकसित भारत@ 2047' कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्रों की प्रतिभागिता केवल 5% ही थी। यह उत्साहजनक आंकड़ा नहीं है। हमें ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए अपने छात्रों का मनोबल बढ़ाना चाहिए ताकि भविष्य में हमारे छात्र राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें।

साथियों! मैं समझता हूँ और जानता हूँ कि हम जो कुछ अब तक अच्छा कर पाए हैं और कर रहे हैं वह आप सबके सम्मिलित प्रयत्नों का ही नतीजा है। तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद गत वर्ष हमने कई ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं। हमारी उपलब्धियाँ किसी एक अकेले व्यक्ति के बूते नहीं हैं, एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। यह टीम वर्क है और हम जितने संगठित तरीके से, एकजुटता के साथ अपने काम को आगे बढ़ाएंगे; उतनी ही तेजी के साथ सही दिशा में इसे आगे ले जा सकेंगे। विश्वविद्यालय हमारा परिवार है। यह हम सबकी संस्था है। इससे हमारी पहचान जुड़ी हुई है। हमें इस संस्था को मन से अपनाने की आवश्यकता है। इसी उम्मीद के साथ मैं आप सबको पुनः गणतंत्र दिवस की बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ -

अंत में हिंदी के विख्यात कवि हरिवंश राय बच्चनकी इन पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ-

कटी बेड़ियाँ औ हथकड़ियाँ, हर्ष मनाओ,
मंगल गाओ, किन्तु यहाँ पर लक्ष्य नहीं है,
आगे पथ पर पाँवबढ़ाओ, आजादी वह मूर्ति नहीं है
जो बैठी रहती मंदिर में,
उसकी पूजा करनी है तो नक्षत्रों से होड़ लगाओ।
हल्का फूल नहीं आजादी, वह है भारी जिम्मेदारी,
उसे उठाने को कन्धों के, भुजदण्डों के, बल को तोलो
एक और जंजीर तड़कती है, भारत माँ की जय बोलो
-हरिवंश राय बच्चन

जयहिंद ! जय अरुणाचल !

कुलपति
राजीव गाँधी विश्वविद्यालय,
दोइमुख